CHAPTER 34

MUSIC

Doctoral Theses

249. उपध्याय (श्रुति)

विभिन्न ग्रंथों के आधार पर रागध्यान एवं रागमाला चित्रों में पारस्परिक सम्बन्ध।

निर्देशिका : डॉ. एम विजयलक्ष्मी

Th 14291

सारांश

भारतीय संगीत एवं चित्रकला के मध्य जैसा सम्बन्ध है वह अन्यत्र कहीं नहीं पाया जाता है । भारतीय संगीत की विशेषता है कि इसमें रागों के स्वरूप का काव्यमय भाषा में अंकन किया जाता रहा है । काव्यमय शब्दचित्रों की तूलिका एवं रंगों के माध्यम से भाषाभिव्यक्ति की गयी है, जो भारतीय चित्रकला एवं संगीत दोनों की ही अनुपम निधि है । संगीत तथा चित्रकला का पारस्परिक संबंध व्यवहारिक रूप में राममाला चित्रों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है । संगीत विषयक ग्रंथों में रागों के काव्यमय वर्णन अर्थात् राग-ध्यान प्राप्त होते हैं जो रागों के भावमय मूर्त रूप का वर्णन करते हैं । रागों के स्त्री व पूरुष रूप के प्रतीक राग व रागिनियों को कुशल चितेरों ने अपनी तूलिका का विषय बनाया और हवेली, महलों की दीवारों, विविध रस ग्रंथों, प्रशस्ति ग्रंथों में चित्रित किया । 16वीं शताब्दी के मध्य इन राग ध्यानों को आधार बनाकर 'रागमालाओं' का निर्माण किया गया । शोध प्रबन्ध में इन्हीं राग ध्यानों व रागमाला चित्रों के परस्पर सम्बन्ध को दर्शाने की चेष्टा की गई है ।

विषय सूची

1. संगीत 2. राग वर्गीकरण 3.राग-रागिनी वर्गीकरण 4. रागध्यान, रागमाला चित्र एवं नायक-नायिका भेद 5. विभिन्न ग्रंथों के आधार पर रागध्यान एवं रागमाला चित्रों में पारस्परिक सम्बन्ध । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

250. कक्कड़ (आशा)

बिहारी सतसई का सांगीतिक मूल्यांकन ।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

Th 14289

सारांश

कविवर बिहारी रीतिकालीन कवियों की श्रृंखला में महत्वपूर्ण स्थान रखतें हैं बिहारी ही एक ऐसे कवि है जिन्होंनें अपने युग की राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का निष्ठा और सच्चाई से वर्णन किया है । बिहारी जी का जीवन काल अकबर, जहाँगीर और शहजहाँ के समय में बीता निःसन्देह बिहारी सतसई पर इनका युग प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । बिहारी सतसई का सांगीतिक विश्लेषण किया है । बिहारी जी गायन वादन तथा नृत्य, संगीत के तीनों पक्षों से परिचित थे। जो उन्होंने संगीत के पारिभाषिक शब्द राग, ताल, स्वर, तान, प्रवीन नट, नटि, गत, ताण्डव, लास्य के तीन प्रकार विकट विषम और लघु लास्य इत्यादि के बारे में नामोल्लेख किया है । बिहारी जी ने अपने समय के संगीत व पूर्व प्रचलित संगीत ज्ञान के दर्शन उनकी काव्य रचना में होते हैं । उस समय राग रागिनी परम्परा समाप्त हो रही थी उस का स्थान रागों ने ले लिया था । भक्ति की जगह श्रृंगार रस प्रधान रचनाओं की रचना प्रारंभ हो गई थी । वीणा के आकार, प्रकार ने भी अन्तर आया इनके समय में रूद्रवीणा प्रचलित थी। बिहारी जी की सतसई में यह प्रभाव स्पष्ट दृष्टि गोचर होता है । इसके अतिरिक्त बिहारी जी ने स्वरार्य प्रबन्ध पर आधारित दोहों की रचना की है जो उस समय बामानी सरगम कहलाये। निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि बिहारी सतसई में उपलब्ध संगीतिक तत्वों के आधार पर बिहारी जी को उत्कृष्ट संगीतज्ञ का दर्जा दिया जा सकता है ।

विषय सूची

1. बिहारी - काल निर्धारण, युग, जीवन एवं व्यक्तित्व 2. सतसई परम्परा और बिहारी 3. सतसई की रचना की प्ररेणा, उद्देश्य और प्रवृत्ति 4. बिहारी सतसई और सांगीतिक तत्व 5 बिहारी सतसई में उपलब्ध वाद्यों का परिचय 6. सूर, मीरा, तुलसी तथा बिहारी की रचनाओं का सांगीतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन । उपसंहार । चित्र राग हिंडोल । ग्रंथ सूची ।

251. गुप्ता (रजनीश कुमार)

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अलंकार और मूर्च्छना का महत्त्व सितार वादन के संदर्भ में ।

निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

Th 14290

सारांश

भारतीय संगीत में रागों के प्रस्तुतीकरण में अलंकार एवं मूर्च्छना दोनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है । अलंकारों के बिना तो राग विस्तार सम्भव ही नहीं होता हे अलंकारों के कुशल प्रयोग से ही कलाकार रागों में सौन्दर्य उत्पन्न करता है, साथ ही साथ शिक्षण के समय इसके अभ्यास से ही सितार वाद्न में कुशलता व तैयारी आती है । शोध-निबंध में भारतीय संगीत का परिचय एवं वाद्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जिसके अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वाद्या-वर्गीकरण के विगत इतिहास में केवल दो प्रमुख परिवर्तन विशेष रूप से हुए हैं अवनद्ध के स्थान पर वितत शब्द का प्रयोग और दूसरा ततानद्ध नाम का नया वर्गीकरण इसके अतिरिक्त चाहे चतुर्विध वर्गीकरण को ही मान्यता दी गई है, लेकिन बहुत से ऐसे वाद्यों का भी निर्माण हो चुका है, जिनका उपर्युक्त चार वर्गों के मूल सिद्धांतों से सामंजस्य नहीं बैठता । सितार वाद्या का उद्गम तथा विकास से संबंधित ऐतिहासिक विभिन्न मतों का विवेचन कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि पूर्व वर्णित मतों की पुष्टि और समर्थन में विद्वानों ने कोई ठोस प्रमाण या तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया है । अलंकार के व्युत्पत्ति गत अर्थ को समझाते हुए विभिन्न प्रकार के अलंकारों की विवेचना की गयी है । मूर्च्छना के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन विद्वानों ने स्वरों की संख्या भिन्न-भिन्न बतायी हैं । प्रायः सभी विद्वानों ने मूर्च्छना को सप्तस्वरा अर्थात् सात स्वर युक्त बताया है । परन्तु मतंग मुनि ने इसके अतिरिक्त द्वादषस्वर युक्त मूर्च्छना के सिद्धांत का उल्लेख किया है, वही नान्यभूपाल ने तार स्थानीय स्वर को भी गिनकर मूर्च्छना को अष्टस्वरा अर्थात् आठ स्वरयुक्त बताया है । मुर्च्छना के संबंध में एक अन्य तथ्य भी ज्ञात होता हे कि मुर्च्छना के चार प्रकारों के विषय में प्राचीन विद्वानों ने दो भिन्न-भिन्न मतों का अनुसरण किया हे । एक मत के अनुसार मुर्च्छना के प्रकार, पूर्णा, षाडवा, औडुवा तथा साधारण है । इस मत को माननेवाले दत्तिल, मतंग, नान्यभूपाल एवं उनके अनुयायी हैं जबकि दूसरे मत के अनुसार मुर्च्छना के चार प्रकार-सम्पूर्णा, सकाकली, सांतरा तथा साधारणीकृता है। इस मत का भरतमुनि तथा अन्य सभी ने अनुसरण किया है । इसके साथ ही सितार वादन में मुर्च्छना का क्या प्रयोजन है । इसका भी विवेचन किया गया है । इस विवेचन से स्पष्ट होता हे कि सितार

वादन में इसका प्रयोग रोगों के आर्विभाव व तिराभाव से लिया जाता है, तथा उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, टप्पा, तराना व रागमाला में इसका प्रयोग देखने को मिलता है ।

विषय सूची

1. भारतीय संगीत का परिचय एवं उसमें वाद्यों का स्थान 2. सितार का उद्‌गम तथा विकास 3. भारतीय संगीत में अलंकारों का महत्त्व सितार वादन के संदर्भ में 4. भारतीय संगीत में मूर्च्छना का महत्व सितार वादन के संदर्भ में । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

252. त्रिपाठी (दिव्या)
संगीत, आध्यात्म एवं मानव नाड़ी-तन्त्र।
निर्देशिका : डॉ. एम विजयलक्ष्मी
Th 14292

सारांश

भारतीय हठयोगी एवं संगीतकार दोनों ने नरदेह को ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का लघुरूप बताया ओर इसी को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का साधन माना । अपने आध्यात्मिक अनुभवों के आधार पर योगियों ने 'नाद तत्व' का वृहद विवेचन किया तथा ध्याान धारणा द्वारा कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से अभूतपूर्व उपलब्धि - "सार्वव्यापी शक्ति से एकाकारिता" प्राप्त की ।

विषय सूची

1. संगीत 2. संगीत के प्रमुख तत्व 3. आध्याात्म 4. मानव नाड़ी-तंत्र 5. योग 6. आधुनिक काल में योग साधन 7. संगीत एवं सहजयोग । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

253. राना (पूजा)
हिन्दुस्तानी संगीत में मेवाती घराने का योगदान ।
निर्देशिका : डॉ. गीता पैन्तल
Th 14288

सारांश

निष्कर्षिय रूप में कहा जा सकता है कि मेवाती घराने के कलाकारों ने मेवाती गायकी का प्रचार व विस्तार किया है एवं अपने चैनदार, सुरीली, स्वर प्रधान, भावुक्तापूर्ण गायकी की धारा प्रवाहित की । ये भारतीय संगीत को अक्षुण रखते हुये संगीत की साधना करते हुये उसका प्रचार व प्रसार कर रहे हैं । मेवाती घराना हिन्दुस्तानी संगीत के उज्जवल रूप को परविर्धित एवं परमार्जित करने का उत्कृष्ट साधन है जो संगीत परम्परा को जीवित रखने का आधार स्तम्भ है ।

विषय सूची

1. घराना शब्द की व्युत्पति एवं विकास 2. मेवाती घराने की प्रतिष्ठापना 3. मेवाती घराने के प्रमुख कलाकारों का परिचय 4. मेंवाती घराने की गायकी की विशेषताएं 5. मेवाती घराने की बंदिशों का साहित्यक एवं सांगीतिक अध्ययन । उपसंहार । ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट ।

254. RAMYAD (Gautami)
Development of Hindustani Classical Music in Mauritius from 1960 Onwards.
Supervisor : Prof. Sunita Dhar
Th 14293

Abstract

In Mauritius, Indian classical music as sangeet (Vocal, instrumental and dance) develop mainly after the performances of Dr. I. Nundlall, the first Mauritian Ph.D. holder in Hindustani Classical Music and after the opening of the school of Indian music and dance and the Mahatma Gandhi Institute. Since 1970, the Mahatma Gandhi Institute caters for the cultural needs of all Mauritians. Starting from certificate courses to B.A. Hons. with education in vocal and instrumental Hindustani music, sitar and tabla which are presently being offered. Apart from progress in the academic side, good caliber performances of Indian music are regularly staged for different occasions. In Mauritius the evolution of Indian Music has been as following : folk and religious, light, then classical. There has been a gradual but positive development as far as Hindustani Classical Music is concerned.

1. The social background of Mauritius with reference to the Indian Community. 2. An overview of the evolution of Indian Music in Mauritius (1834 - 2004). 3. The contribution of some renowned musicians in the field of Hindustani Classical Music in Mauritius. 4. The institutionalization of Indian Classical Music and dance in Mauritius. 5. The contribution of Associations, Organizations, Ministries, Embsassies and others in the promotion and propagation of Indian Classical Music in Mauritius. 6. The role played by the Media in the propagation of Hindustani Classical Music in Mauritius. Conclusion. Bibliography and Appendix.

M.Phil Dissertations

255. कुमुद
ख्याल के जयपुर घराने की संगीत परम्परा ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

256. गौड़ (आदिती)
गोड मल्हार राग का सर्वांगीण अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. मजुंश्री त्यागी

257. चौपड़ा (शैली)
दिल्ली घराने के कलाकारों द्वारा रचित बन्दिशों का सौन्दर्यबोध अथवा सौन्दर्यात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

258. जैन (नमिता)
हिन्दुस्तानी शस्त्रीय संगीत में चर्तुरंग ज्ञान शैली।
निर्देशक : डा. एन आर चौधरी

259. ठाकुर (शालिनी)
हिन्दुस्तानी संगीत में कर्नाटक संगीत से लिए गये प्रचिलित रागों का अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल

260. नागेच (सारिका)
लखनऊ के बिन्दादीन महाराज द्वारा रचित ठुमरियों का संकलन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. एन पी अहमद

261. पूनम
भारतीय संगीत के विकास में ललित कलाओं का योगदान।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

262. भोला (हिना)
भारतीय संस्कृति व संगीत ।
निर्देशिका : प्रो. अंजली मित्तल

263. राय (शारदा)
उपशास्त्रीय संगीत में सौन्दर्य दृष्टि -ठुमरी, ज्ञान के सन्दर्भ में ।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

264. शर्मा (पूजा)
बेगम अख्तर की गायकी की परमपरा का निर्वाह करने वाले प्रमुख आधुनिक शिष्य ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल

265. सक्सेना (नीता)
कल्याण अंग के अप्रचलित रागों का विस्तृत वर्णन।
निर्देशक : डॉ. एन आर चौधरी

266. समीता आनंद
खिलज़ी काल में भारतीय संगीत की स्थिति ।
निर्देशिका : प्रो. एन पी अहमद

267. सिंह (संजय कुमार)
उत्तर प्रदेश के पूर्वाचंल में प्रचलित भोजपुरी लोकगीतों के विभिन्न प्रकार।
निर्देशिका : प्रो. अंजली मित्तल

268. सुमन
उत्तर प्रदेश में प्रचलित ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व।
निर्देशिका : प्रो. एन पी अहमद

269. हनुमान कुमार
सुशिर वादयों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

270. हरमीत कौर
राग सौन्दर्याभिव्यक्ति में तानों और अलंकृत स्वर्ण की भूमिका।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन